

# एक फूल की चाह

~ सियारामशरण गुप्त

## प्रश्न-उत्तर

**प्रश्न 1. बीमार बच्ची ने क्या इच्छा प्रकट की?**

उत्तर : बीमार बच्ची ने प्रसाद के रूप में देवी माँ के एक फूल की इच्छा प्रकट की ।

**प्रश्न 2. सुखिया के पिता पर कौन-सा आरोप लगाकर उसे दंडित किया गया?**

उत्तर : सुखिया के पिता पर कई तरह के आरोप लगाए गए-

- अछूत होने की गाली दी गई ।
- साफ़-सुथरे कपड़े पहनने वाला धूर्त कहा गया ।
- मंदिर की पवित्रता भंग करने का आरोप लगाकर दंडित किया गया।

**प्रश्न 3. जेल से छूटने के बाद सुखिया के पिता ने अपनी बच्ची को किस रूप में पाया?**

उत्तर : जेल से छूटने के बाद सुखिया के पिता को उसकी बच्ची कहीं नहीं दिखी तो उसके रिश्तेदारों से उसे पता चला कि उसकी बच्ची मर चुकी है और उसका अंतिम संस्कार किया जा चुका है। अतः जेल से छूटने के बाद सुखिया के पिता ने अपनी बच्ची को राख की ढेरी के रूप में पाया ।

#### प्रश्न 4. इस कविता का केंद्रीय भाव अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : इस कविता का केंद्रीय भाव समाज में फैला छुआछूत है, जो मानवता के नाम पर कलंक है। जन्म के आधार पर किसी को अछूत मानना एक अपराध है। मंदिर जैसे पवित्र स्थानों पर अछूत होने पर किसी के प्रवेश पर रोक लगाना सर्वथा अनुचित है, परन्तु समाज के कुछ संभ्रांत लोग एवं धार्मिक लोग इस प्रथा को बढ़ावा देते हैं। कवि इस कविता के मुख्य पात्र सुखिया के पिता का उदाहरण देते हुए कहता है कि वह एक अछूत है। उसकी बेटी एक महामारी की चपेट में आ जाती है। बेटी की इच्छा पूरी करने के लिए वह मंदिर जाता है ताकि देवी माँ के प्रसाद का फूल ले आये। मंदिर में भक्त लोग उसकी जमकर पिटाई करते हैं क्योंकि वह अछूत हो कर भी मंदिर में आया था। फिर उसे दंड के रूप में सात दिन की जेल हो जाती है क्योंकि एक अछूत होने के नाते वह मंदिर को अशुद्ध करने का दोषी पाया जाता है। जेल से छूटने के बाद सुखिया के पिता अपनी बच्ची को राख की ढेरी के रूप में पाते हैं। कविता में दिखाया गया है कि एक सामाजिक कुरीति के कारण एक व्यक्ति को इतना भी अधिकार नहीं मिलता है कि वह अपनी बीमार बच्ची की एक छोटी सी इच्छा पूरी कर सके।

कवि चाहता है कि इस प्रकार की सामाजिक विषमता का शीघ्र अंत हो, और सभी को सामाजिक एवं धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त होनी चाहिए।

\*\*\*\*\*